IJSSRA l ISSN (online): 3107-6238
January-March 2026 l Vol. 1 l Issue 4

बुक्सा जनजातियों की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति शेरपुर (उत्तराखण्ड) के सन्दर्भ में

मनोज कुमार[1] & प्रोफेसर गोपाल कृष्ण ठाकुर[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ई-मेल: mkrao3403@gmail.com
[2]हेड & डीन, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत
ई-मेल: gopalthakur@hindivishwa.ac.in

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20631218
Received on: **20/03/2026** Accepted on: **30/03/2026** Published on: **10/04/2026**

सारांश:

भारत की जनजातियाँ अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक विशेषताओं के कारण विशेष महत्व रखती हैं। उत्तराखण्ड राज्य की प्रमुख जनजातियों में बुक्सा जनजाति का विशेष स्थान है। यह जनजाति मुख्यतः देहरादून, ऊधमसिंह नगर,पौड़ी गढ़वाल, नैनीताल के क्षेत्रों में निवास करती है। प्रस्तुत शोध-पत्र में देहरादून जनपद के विकासनगर क्षेत्र स्थित शेरपुर ग्राम में निवासरत बुक्सा जनजाति की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखकर विश्लेषण किया गया है। इसके अंतर्गत बुक्सा जनजाति की शैक्षिक एवं सामाजिक स्थिति को प्रस्तुत किया गया है। जनगणना 2011 के अनुसार शेरपुर की कुल जनसंख्या लगभग 1917 है। शैक्षिक स्थिति प्राथमिक स्तर ड्राप आउट दर कम है और माध्यमिक स्तर पर ड्राप दर अधिक है। ड्राप आउट दर अधिक होने का प्रमुख कारण बेरोगारी और आर्थिक स्थिति है।

मुख्य शब्द *: बुक्सा जनजाति, शिक्षा और सामाजिक स्थिति।*

प्रस्तावना:

भारतीय समाज विविधताओं से परिपूर्ण है, जिसमें जनजातीय समुदायों की विशिष्ट पहचान है। जनजातियाँ अपनी पारंपरिक जीवन शैली, संस्कृति, रीति-रिवाज तथा सामाजिक संरचना के कारण अन्य समुदायों से भिन्न दिखाई देती हैं। संविधान में अनुसूचित जनजातियों के संरक्षण एवं विकास के लिए अनेक प्रावधान किए गए है। उत्तराखण्ड की अनुसूचित जनजातियों में बुक्सा जनजाति प्रमुख है। बुक्सा जनजाति मुख्य रूप से तराई एवं भाबर क्षेत्रों में निवास करती है। इनका जीवन पारंपरिक रूप से कृषि, मजदूरी तथा वन संसाधनों पर आधारित रहा है। आधुनिक शिक्षा और सरकारी विकास

योजनाओं के प्रभाव से इनके जीवन में परिवर्तन आ रहा है, परन्तु सामाजिक एवं शैक्षिक पिछड़ापन अभी भी एक महत्वपूर्ण समस्या है।

बुक्सा जनजाति का परिचय:

बुक्सा जनजाति उत्तराखंड की प्रमुख जनजातियों में से एक है, जो मुख्यतः देहरादून, नैनीताल, हरिद्वार, उधम सिंह नगर तथा पौड़ी गढ़वाल इत्यादि जिलों की ग्रामीण बस्तियों में निवास करती है। इनका निवास प्रायः वन क्षेत्रों, नदी-नालों के किनारे तथा कृषि योग्य भूमि के आसपास पाया जाता है। बुक्सा जनजाति जिन बस्तियों में निवास करती है, उन्हें स्थानीय रूप से 'भोक्सार' कहा जाता है, जो उनकी सामुदायिक जीवन-शैली और पारंपरिक बसावट को दर्शाता है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से बुक्सा जनजाति का जीवन प्रकृति के अत्यंत निकट है। ये लोग पारंपरिक रीति-रिवाजों, लोक परंपराओं तथा सामुदायिक सहयोग की भावना के साथ अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इनके जीवन में परिवार और समुदाय का विशेष महत्व होता है, जहाँ बुजुर्गों का सम्मान किया जाता है तथा सामूहिक निर्णय लेने की परंपरा प्रचलित है। शारीरिक संरचना की दृष्टि से बुक्सा जनजाति के लोग सामान्यतः छोटे या मध्यम कद के होते हैं। इनकी मुखाकृति अपेक्षाकृत चौड़ी, नासिका सामान्य से कुछ ऊँची तथा शरीर संरचना सुदृढ़ होती है। इनके चेहरे पर एक विशिष्ट सरलता और स्वाभाविकता परिलक्षित होती है। पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को अधिक आकर्षक माना जाता है। महिलाओं का चेहरा प्रायः गोल, त्वचा का रंग गेहुँआ तथा व्यक्तित्व सौम्य होता है। वे पारंपरिक परिधान एवं आभूषण धारण करती हैं, जो उनकी सांस्कृतिक पहचान को और अधिक सुदृढ़ बनाते हैं (लाल, 2020)।

अनुसंधान विधि:

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक एवं वर्णनात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आंकड़े साक्षात्कार, सहभागी अवलोकन तथा समूह चर्चा के माध्यम से प्राप्त किए गए जबकि द्वितीयक आंकड़े जनगणना रिपोर्ट, शोध पत्र , सरकारी रिपोर्ट तथा संबंधित साहित्य से संकलित किए गए।

बुक्सा जनजाति की शैक्षिक स्थिति:

बुक्सा जनजाति की शैक्षिक स्थिति ऐतिहासिक रूप से अपेक्षाकृत पिछड़ी रही है, जिसका प्रमुख कारण आर्थिक सीमाएँ, सामाजिक जागरूकता का अभाव, शैक्षिक संसाधनों की सीमित उपलब्धता तथा जनजातीय क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थितियाँ रही हैं। परम्परागत रूप से बुक्सा समुदाय का जीवन आजीविका एवं सामाजिक गतिविधियों पर अधिक केन्द्रित रहा है, जिसके कारण शिक्षा को अपेक्षित महत्त्व नहीं मिल पाया। तथापि वर्तमान समय में शिक्षा के प्रति समुदाय में जागरूकता एवं सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास हुआ है। सरकारी योजनाओं, छात्रवृत्तियों, आवासीय विद्यालयों तथा

जनजातीय कल्याण कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यालयों में नामांकन एवं उपस्थिति में वृद्धि देखी जा रही है। विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिभावकों की रुचि में वृद्धि हुई है, जिससे समुदाय की शैक्षिक प्रगति को बल मिला है। इसके बावजूद विद्यालय में (ड्रॉपआउट), उच्च शिक्षा तक सीमित पहुँच, आर्थिक कठिनाइयाँ तथा गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक सुविधाओं का अभाव जैसी समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि बुक्सा जनजाति की शैक्षिक स्थिति में निरन्तर सुधार हो रहा है, किन्तु इसके समग्र शैक्षिक विकास हेतु शिक्षा के प्रति जागरूकता, संसाधनों की उपलब्धता तथा प्रभावी शैक्षिक नीतियों के क्रियान्वयन की आवश्यकता बनी हुई है।

बुक्सा जनजाति की सामाजिक स्थिति:

बुक्सा जनजाति उत्तराखण्ड की एक प्रमुख अनुसूचित जनजाति है, जिसकी सामाजिक स्थिति परम्परागत सांस्कृतिक मूल्यों, सामुदायिक एकता तथा प्रकृति-आधारित जीवनशैली से प्रभावित रही है। बुक्सा समुदाय में परिवार सामाजिक संगठन की मूल इकाई है तथा पारस्परिक सहयोग, सामूहिकता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विशेष रूप से विद्यमान है। समुदाय में विवाह, जन्म, मृत्यु तथा अन्य सामाजिक अवसरों से सम्बन्धित परम्परागत रीति-रिवाजों का पालन आज भी किया जाता है, यद्यपि आधुनिक शिक्षा, नगरीकरण एवं संचार माध्यमों के प्रभाव से सामाजिक संरचना में परिवर्तन हो रहा है। बुक्सा जनजाति की सामाजिक स्थिति का अध्ययन यह दर्शाता है कि समुदाय आज भी शिक्षा के निम्न स्तर, आर्थिक सीमाओं, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं तथा सामाजिक जागरूकता के अभाव जैसी चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसके बावजूद सरकारी योजनाओं, शैक्षिक अवसरों एवं सामाजिक विकास कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप समुदाय में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। विशेष रूप से युवा पीढ़ी एवं महिलाओं की बढ़ती शैक्षिक सहभागिता ने सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान की है। इस प्रकार बुक्सा जनजाति की सामाजिक स्थिति परम्परा और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए निरन्तर विकास की दिशा में अग्रसर दिखाई देती है।

बुक्सा जनजाति की पारिवारिक संरचना:

बुक्सा जनजाति की सामाजिक संरचना में परिवार एक महत्त्वपूर्ण संस्था के रूप में कार्य करता है। परम्परागत रूप से इस समुदाय में संयुक्त परिवार व्यवस्था का प्रचलन अधिक रहा है, जिसमें एक ही परिवार की अनेक पीढ़ियाँ एक साथ निवास करती हैं तथा आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्तरदायित्वों का सामूहिक रूप से निर्वहन करती हैं। परिवार के मुखिया, प्रायः वरिष्ठ पुरुष सदस्य, पारिवारिक निर्णयों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि परिवार के अन्य सदस्य भी विभिन्न कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं। परिवार के भीतर पारस्परिक सहयोग, सामूहिकता, अनुशासन तथा बड़ों के प्रति सम्मान की भावना प्रमुख रूप से विद्यमान है। बच्चों के पालन-पोषण, सामाजिक मूल्यों के हस्तान्तरण तथा सांस्कृतिक परम्पराओं

के संरक्षण में परिवार की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार, नगरीकरण, रोजगार के नए अवसरों, आर्थिक परिवर्तनों तथा आधुनिक जीवनशैली के प्रभाव के कारण बुक्सा जनजाति की पारिवारिक संरचना में परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। संयुक्त परिवारों के साथ-साथ एकल परिवारों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, जहाँ पति-पत्नी एवं उनके अविवाहित बच्चे स्वतंत्र रूप से निवास करते हैं। यद्यपि परिवारों की संरचना में परिवर्तन आया है, फिर भी समुदाय में पारिवारिक सम्बन्धों की निकटता, आपसी सहयोग तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना आज भी विद्यमान है। इस प्रकार बुक्सा जनजाति की पारिवारिक संरचना परम्परागत संयुक्त परिवार व्यवस्था एवं आधुनिक एकल परिवार प्रणाली के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए निरन्तर परिवर्तनशील स्वरूप को प्रदर्शित करती है।

विवाह व्यवस्था:

बुक्सा जनजाति के सामाजिक जीवन में विवाह एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था के रूप में स्थापित है। विवाह को केवल दो व्यक्तियों के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने का माध्यम नहीं माना जाता, बल्कि यह दो परिवारों एवं सामाजिक समूहों के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करने वाली व्यवस्था के रूप में भी देखा जाता है। परम्परागत रूप से बुक्सा समुदाय में विवाह, समुदाय की सामाजिक मान्यताओं, रीति-रिवाजों एवं सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुरूप सम्पन्न किए जाते हैं। विवाह सम्बन्धी निर्णयों में परिवार के वरिष्ठ सदस्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है तथा वर-वधू के परिवारों के मध्य सहमति को विशेष महत्त्व दिया जाता है। बुक्सा समुदाय में विवाह से जुड़े विभिन्न रीति-रिवाज एवं संस्कार प्रचलित हैं, जिनका पालन सामाजिक परम्पराओं के अनुसार किया जाता है। विवाह समारोहों में समुदाय के सदस्यों की सक्रिय सहभागिता देखने को मिलती है, जिससे सामाजिक एकता एवं सामुदायिक सहयोग की भावना सुदृढ़ होती है। विवाह के अवसर पर पारम्परिक लोकगीत, नृत्य तथा अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती हैं, जो समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्त करती हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार, सामाजिक जागरूकता, नगरीकरण तथा आधुनिक संचार माध्यमों के प्रभाव के कारण बुक्सा जनजाति की विवाह व्यवस्था में भी परिवर्तन हो रहे हैं। पारम्परिक विवाह पद्धतियों के साथ-साथ आधुनिक वैवाहिक प्रवृत्तियों का प्रभाव भी देखा जाता है। विवाह की आयु में वृद्धि, वर-वधू की सहमति को महत्त्व दिया जाता है।

महिलाओं की स्थिति:

बुक्सा जनजाति के सामाजिक जीवन में महिलाओं की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। वे परिवार एवं समुदाय के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन में सक्रिय योगदान प्रदान करती हैं। परम्परागत रूप से बुक्सा महिलाएँ घरेलू कार्यों के साथ-साथ कृषि कार्यों, पशुपालन, वन उत्पादों के संग्रहण तथा दैनिक मजदूरी जैसे कार्यों में भी सहभागिता निभाती रही हैं। परिवार

की आजीविका को सुदृढ़ बनाने में उनका योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। बच्चों के पालन-पोषण, परिवार के सदस्यों की देखभाल तथा सांस्कृतिक परम्पराओं एवं सामाजिक मूल्यों के संरक्षण में भी महिलाओं की प्रमुख भूमिका होती है। सामाजिक दृष्टि से बुक्सा समुदाय में महिलाओं को परिवार का एक महत्त्वपूर्ण अंग माना जाता है तथा वे पारिवारिक एवं सामुदायिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार, सामाजिक जागरूकता तथा सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के प्रभाव से महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। महिलाओं की शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण अधिक सकारात्मक हुआ है तथा बालिकाओं की विद्यालयी शिक्षा में सहभागिता बढ़ी है। इसके अतिरिक्त स्वयं सहायता समूहों, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक भागीदारी में भी वृद्धि हुई है। महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, तथापि वे अभी भी अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैं। शिक्षा का अपेक्षाकृत निम्न स्तर, सीमित आर्थिक अवसर, स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएँ, संसाधनों तक सीमित पहुँच तथा कुछ मामलों में निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में कम सहभागिता जैसी समस्याएँ विद्यमान हैं। ग्रामीण एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में लैंगिक असमानता के कुछ स्वरूप आज भी देखने को मिलते हैं, जो महिलाओं के समग्र विकास को प्रभावित करते हैं। इसके बावजूद बुक्सा समुदाय की महिलाएँ सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते हुए परिवार तथा समुदाय के विकास में निरन्तर योगदान दे रही हैं। इस प्रकार बुक्सा जनजाति में महिलाओं की स्थिति परम्परागत उत्तरदायित्वों एवं आधुनिक अवसरों के मध्य संतुलन स्थापित करते हुए क्रमशः सुदृढ़ एवं सशक्त होती दिखाई देती है।

सामाजिक परिवर्तन:

बुक्सा जनजाति के सामाजिक जीवन में वर्तमान समय में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। परम्परागत रूप से यह समुदाय अपनी विशिष्ट सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं, रीति-रिवाजों तथा जीवनशैली के लिए जाना जाता रहा है, किन्तु शिक्षा, नगरीकरण, औद्योगीकरण, संचार माध्यमों तथा सरकारी विकास कार्यक्रमों के प्रभाव से इसके सामाजिक जीवन में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। विभिन्न जनजातीय कल्याण योजनाओं, शैक्षिक सुविधाओं तथा सामाजिक जागरूकता कार्यक्रमों ने समुदाय के लोगों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिक्षा के प्रसार ने बुक्सा समुदाय में सामाजिक चेतना एवं जागरूकता को बढ़ावा दिया है। विशेष रूप से युवा पीढ़ी आधुनिक शिक्षा, तकनीकी ज्ञान तथा रोजगार के नवीन अवसरों की ओर आकर्षित हो रही है। इसके परिणामस्वरूप जीवनशैली, विचारधारा, पारिवारिक संरचना तथा सामाजिक व्यवहार में परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। पहले जहाँ समुदाय का जीवन मुख्यतः कृषि, मजदूरी तथा पारम्परिक व्यवसायों पर आधारित था, वहीं अब युवा वर्ग सरकारी एवं गैर-सरकारी सेवाओं, व्यवसाय तथा

अन्य आधुनिक रोजगार क्षेत्रों में भी अपनी भागीदारी बढ़ा रहा है। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने भी सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति प्रदान की है। मोबाइल फोन, इंटरनेट, टेलीविजन तथा सोशल मीडिया के माध्यम से समुदाय के लोग बाहरी समाज एवं आधुनिक जीवन-मूल्यों से परिचित हो रहे हैं। इसके फलस्वरूप शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक अधिकारों के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है। महिलाओं की शिक्षा एवं सामाजिक सहभागिता में भी सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। सामाजिक परिवर्तन के अनेक सकारात्मक प्रभाव दिखाई देते हैं, तथापि इसके कारण कुछ पारम्परिक सांस्कृतिक मूल्यों एवं रीति-रिवाजों में परिवर्तन भी हो रहा है। नई पीढ़ी आधुनिक जीवनशैली को अपनाने की ओर अग्रसर है, जिसके परिणामस्वरूप कुछ पारम्परिक प्रथाओं एवं सांस्कृतिक परम्पराओं का प्रभाव अपेक्षाकृत कम होता दिखाई देता है। फिर भी बुक्सा समुदाय अपनी सांस्कृतिक पहचान एवं सामाजिक विरासत को संरक्षित रखते हुए आधुनिक विकास की प्रक्रिया में सहभागी बनने का प्रयास कर रहा है। इस प्रकार बुक्सा जनजाति में सामाजिक परिवर्तन परम्परा एवं आधुनिकता के समन्वय का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शेरपुर ग्राम में निवासरत बुक्सा जनजाति सामाजिक एवं शैक्षिक परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रही है। समुदाय में शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ी है, किन्तु आर्थिक अभाव, बेरोजगारी तथा संसाधनों की कमी के कारण माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा स्तर पर विद्यालय छोड़ने की समस्या मौजूद है। सामाजिक दृष्टि से बुक्सा जनजाति आज भी अपनी पारंपरिक संस्कृति, सामुदायिक एकता एवं सामाजिक मूल्यों को बनाए हुए है, जबकि आधुनिक शिक्षा एवं सरकारी योजनाओं के प्रभाव से सामाजिक परिवर्तन भी हो रहा है।

सन्दर्भ:

- अविदा, एवं भूषण, पी. (2020). उत्तराखंड में बुक्सा जनजाति की संस्कृति. *जनरल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इनोवेटिव रिसर्च, 7*(8) ,915-917.
- कश्यप एस. (2011). *हशियाकारण के बीच एक स्कूल में सहरिया आदिवासी*
- कुमार एम. (2020) भारत में दलित महिलाओं की दैनिक स्थित एक राजनीतिक विश्लेषण *इंटरनेशनल जनरल एडवांसड अकादमिक स्टडी,2*(3), 689-692.
- कुमार डी.(2018). *उत्तराखंड की थारू एंव बोक्सा जनजाति में परम्परागत चिकित्सा (तंत्र -मंत्र) व्यवस्था एक अध्ययन ऑनलाइन जनरल मल्टीडीसीप्लेनेरी सब्जेक्ट (14-18)*

- खत्री एन. (2015). हेल्थ अवेयरनेस थ्रू यूज ऑफ कम्यूनिटी रेडियो स्टेशन एमोंग बुक्सा ड्राइव्स ऑफ हिमालयन रीज़न, *एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी. (122 -126)*
- चंद्र एच.(2018, अक्टू.). परिवर्तन एवं विकास का मिथक कल्याणकारी योजनाओं और पंचायतीय राज के बाजपुर विकास खण्ड की बुक्सा जनजाति महिलाओ के संदर्भ में, *श्रृंखला एक शोध परक वैचारिक पत्रिका 6*(2),132-146.
- चंद्र, एच. (2018). बुक्सा जनजाति में राजनीतिक सहभागिता का मिथक अथवा वास्तविकता बाजपुर विकास खंड के संदर्भ मे. *रिमार्किंग* एन *एनालिसेशन*, *3*(3),18-25.
- जोशी,एस.डी.(1990) *अ स्टडी आँफ एजुकेशन प्राब्लम्स आँफ शेड्यूल कास्ट्स एंड शेड्यूल ट्राइब्स स्टूडेंट्स इन बडौदा डिस्ट्रिक्ट यूनिवर्सिटी आँफ बडौदा:महाराज शिवाजीराव*
- दीक्षित,यू .एन .(1996). *आदिवासी शिक्षा का विकास.*
- भगत पी. एंव ठाकुर जी के .(2017). भारत में आदिवासियों की शैक्षिक स्थिति एंव शिक्षक की भूमिका रिसर्च जनरल. *फॉर हुमैनीटी साइंस एंड इंग्लिश लैंग्वेज 4*(24),पृष्ट.सं.6538-6539
- भट्ट एम.(2017). बुक्सा जनजाति की सांस्कृतिक सामाजिक समस्या. *रिसर्च क्रोनी कलर इंटरनेशनल मल्टीडिसीप्लिनरी पीयर्स रिव्यू जनरल,4*(1),112-114.
- वर्मा एस एंव. यादव जी एस. फूड हैबिट्स आमोंग द एडुकेटेड यूथ ऑफ थारू बुक्सा ट्राइब्स *इंटरनेशनल स्कॉलर्स जनरल, 2* (6), 67-70.
- सिंह. के. एंव उपाध्याय एन. (2020). बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 8*(11), 3583-3587.